इकाई 12 सामाजिक सद्भाव

संरचना

12.1 प्रस्तावना

लक्ष्य एवं उद्देश्य

12.2 सद्भाव का अर्थ

12.3 पश्चिम में सद्भाव

12.4 सद्भाव का वर्गीकरण

12.5 सामाजिक सद्भाव की अवधारणा

12.6 सामाजिक सद्भाव को कैसे समझा जाए?

12.7 सामाजिक सद्भाव को बिगाड़ने वाले कारक

12.8 सामाजिक सद्भाव को कैसे कायम किया जाए?

12.9 सद्भावपूर्ण समाज की विशेषताएं

12.10 सामाजिक सद्भाव को प्रोत्साहन

12.11 सामाजिक सद्भाव पर गाँधी

12.12 सारांश

12.13 संदर्भ ग्रंथ

12.14 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

12.1 प्रस्तावना

भारत एक अरब से अधिक लोगों का समाज है। लोगों के जाति समूहों के मूल भिन्न हैं और समाज कई जातियों और समुदायों में विभाजित है। मानव ईश्वर की सबसे अनुपम, बुद्धिमान और कुशल कृति है। हमारे महाकाव्य इस विश्वास को दृढ़ता प्रदान करते हैं कि ईश्वर ने मनुष्य को अपने जैसा बनाया ताकि वह ईश्वर द्वारा रचित सभी वस्तुओं तक पहुँच सके तथा कुछ प्रयासों से स्वयं ईश्वर तक भी पहुँच सके। मनुष्य के इन्हीं गुणों ने उसे अपने आप को तथा वातावरण को विकसित करने की क्षमता प्रदान की है। प्रत्येक दिन मनुष्य विकास के नये कीर्तिमान स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ता जाता है। परन्तु विकास के प्रति अत्यधिक झुकाव ने संयुक्त उन्नति के लिए खतरे पैदा किये हैं। संयुक्त उन्नति सामाजिक सौहार्द के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आम जनता को विभिन्न स्थितिओं, रंगों, नस्लों, यौन झुकावों आदि वाले व्यक्तियों के रूप में विस्तार दिया गया है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति विशेष के आधार पर व्यक्तियों तथा विशेषज्ञों के लक्ष्य अलग-अलग होते हैं। मोटे तौर पर सामाजिक लक्ष्यों को कम महत्व दिया जाता है। विस्तार को इस प्रकार एक साथ जोड़ा जाना चाहिए ताकि बड़े पैमाने पर उन्नति का विकल्प प्राप्त हो।

लक्ष्य एवं उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप निम्न को समझ सकेंगे

- सद्भाव और सामाजिक सद्भाव : अर्थ व अवधारणा

डॉ. आशु पसरीचाअध्यक्ष, गांधीवादी और शांति अध्ययन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

- सद्‌भाव का वर्गीकरण
- सामाजिक सद्‌भाव को किस प्रकार प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए
- पश्चिम दुनिया के अनुसार सद्‌भाव

12.2 सद्‌भाव का सही अर्थ

इस व्यक्त और अव्यक्त ब्रह्मांड में सद्‌भाव को विभिन्न स्थितियों के रूप में पारिभाषित किया गया है जो एक-दूसरे को सहयोग देती हैं और प्रभावित भी करती हैं। जब उत्तेजना की स्थिति शांत होती है तो सद्‌भाव कायम होता है। सत्व, रजस और तमस के बीच संतुलन से इसे प्राप्त किया जा सकता है। प्रकृति में सद्‌भाव, प्रकृति की प्रत्येक शक्ति के बीच संतुलन से कायम होता है। ये शक्तियां एक-दूसरे को प्रभावित किये बगैर अस्तित्व बनाए रखती हैं। इस स्थिति को प्राप्त करना कठिन है क्योंकि कई शक्तियाँ एक-दूसरे पर निर्भर होती हैं जो मनुष्य के नियंत्रण से बाहर होती हैं जो मनुष्य के नियंत्रण से बाहर होती हैं। ऐसी स्थिति तभी प्राप्त होती है जब इन शक्तियों की क्षमता प्राकृतिक रूप से खो जाती है।

लोगों की नजर में सद्‌भाव की स्थिति में व्यक्ति पक्षपात रहित होता हैं और शंका होने की स्थिति में भी हस्तक्षेप करने से बचता है। इसे पूरा करने के लिए एक समग्र संज्ञान होना सबसे सरल दृष्टिकोण है। शरीर का अपनी शारीरिक स्थिति से सद्‌भाव एक ऐसी स्थिति है जो आंतरिक व बाह्य प्रकृति के मध्य सामंजस्य से प्राप्त किया जा सकता है। चिंतन, आकर्षक व्यक्तित्व, ठोस जीवन शैली और निरंतर व्यायाम इसे प्राप्त करने की स्थिति को प्रभावित करते हैं।

सद्‌भाव सामाजिक व्यवहार की एक स्थिति है जहां एक व्यक्ति, अन्य व्यक्तियों/प्राणियों (प्रकृति और पशु समेत) के साथ स्वयं की या धार्मिक या नस्ल संबंधी संतुष्टि को नियंत्रित करने के लिए साझेदारी करता है। व्यक्ति उन स्थितियों से रणनीतिक दूरी बनाए रखता है जो व्यर्थ में झगड़े पैदा करती हैं।

सद्‌भाव विविधता में एकता है। सद्‌भाव तब कायम होता है जब कई चीजों का महत्व कम होकर एक प्रकार की एकता को जन्म देती है। जहाँ विविधिता नहीं है वहाँ सद्‌भाव नहीं है। इसके विपरीत, जहां विविधता क्रम और अनुपात में नहीं है, वहाँ सद्‌भाव नहीं होता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जहां जितनी अधिक विविधता और विविधता में एकता होगी तो सद्‌भाव उच्च स्तर का होगा।

एक तर्कसंगत और समझदार योजना के तहत सद्‌भाव ब्रह्मांड की स्थिर नींव का हिस्सा है। यह सार्वकालिक है और इसे सार्वभौमिक वैधता प्राप्त है। यह एक गणितीय रूप है जिसे सभी तर्कसंगत प्राणी पहचान सकते हैं। सद्‌भाव एक सुस्पष्ट क्रम और यहाँ तक कि संख्यात्मक सटीकता का प्रतीक है। यह ब्रह्मांड की चरम बुद्धिमानी, क्रम और अभिप्रेरित रचना की सबसे महान अभिव्यक्ति है।

12.3 पश्चिम में सद्‌भाव

प्राचीन यूनान में हरमोनिया का अर्थ था - ध्वनियों का मेल। इसके मूल शब्द का अर्थ है - एक साथ जोड़ना, जैसा एक नाव बनाने के लिए विभिन्न हिस्सों को जोड़ा जाता है। एक साथ जोड़ने या फिट होने का मतलब है - विभिन्न हिस्सों को जोड़कर एक बड़ा व पूर्ण का निर्माण। ऐसे निर्माण से पता चलता है कि जुड़ने वाले सभी हिस्सों में एक प्रकार की अनुकूलता है।

पाइथागोरस पहला व्यक्ति था जिसने संसार के लिए 'कोसमोस' शब्द का प्रयोग किया जिसका अर्थ प्राचीन यूनान में 'क्रम' होता था। प्रत्येक संख्या और संख्यात्मक संबंध का एक निर्धारित स्थान और तार्किक संबंध है। इसी प्रकार कोसमोस में प्रत्येक चीज को बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से व्यवस्थित किया गया है। कोसमोस की इस व्यवस्था तथा अंतर-संबंध को प्रतीक चिन्ह (लोगो) के रूप में समझा जा सकता है। लोगो शब्द के कई अर्थ हैं। (शब्द और अर्थ शामिल) लोगो, कोसमोस की सभी वस्तुओं के बीच अंतर-संबंध की बुद्धिमत्ता को दर्शाता है। सभी चीजें व्यवस्थित हैं ताकि मनुष्य की बुद्धिमता इसे समझ सकें, ठीक वैसे ही जैसे हम संख्याओं और गणितीय आवश्यकताओं को समझते हैं।

ऐसी मान्यता थी कि छिपी हुई संख्याओं ने एक उत्कृष्ट बुद्धिमत्तापूर्ण क्रम में कोसमोस की संरचना है। इससे पाइथागोरस इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सभी आकाशीय पिंड गणितीय सिद्धांतों के आधार पर गतिशील रहते हैं। अरस्तू ने कहा था, "वे मानते थे .... संपूर्ण स्वर्ग एक संगीत - सप्तक (हरमोनिया) और एक संख्या है।" सबसे पहले पाइथागोरस ने "गोलों का सामंजस्य" की अवधारणा का प्रतिपादन किया। इस अवधारणा के अनुसार आकाशीय पिंड अपनी कक्षाओं में उसी अनुपात में पृथ्वी का चक्कर लगाते हैं जिस अनुपात में संगीतमय सुरों की रचना होती है। जब वे गतिशील रहते हैं तो दिव्य संगीत की रचना होती है जिसे सुनना तो संभव नहीं है लेकिन गणितीय रूप में उत्कृष्ट होता है। (अरस्तू, मेटाफिजिम्स, भाग, खंड 5)।

व्यक्तिगत साधना की पाइथागोरस परियोजना को शरीर और आत्मा के सामंजस्य की प्रक्रिया के रूप में भी समझा जा सकता है। पाइथागोरस के शिक्षण का उद्देश्य व्यक्ति के शरीर और आत्मा के बीच उसी प्रकार का संतुलन स्थापित करना था जिस प्रकार का संतुलन ब्रह्मांड में पूर्व-स्थापित था।

प्रत्येक व्यक्ति सामंजस्य के एक महान अनुक्रम का हिस्सा था - संगीतमय सामंजस्य, शरीर और आत्मा का सामंजस्य, सामाजिक सद्भाव का सामंजस्य तथा आकाशीय सामंजस्य। इन सभी स्तरों पर पाइथागोरस के समर्थकों ने पूरे कोसमोस में सामंजस्य के अनुक्रम सिद्धांत को रेखांकित किया।

सामंजस्य पर आधारित पाइथागोरस की अवधारणा एक तार्किक क्रम के आधार पर एक व्यापक परिदृश्य के उपयुक्त है जिसमें निश्चित अनुपात और निश्चित कक्षाएं सर्वोत्तम और अपरिवर्तनशील है, जहां पूर्ण संख्याएं वैश्विक घटनाओं को एक बुद्धिमत्तापूर्ण आधार प्रदान करती हैं और जहां प्रकट अव्यवस्था और विविधता को सार्वभौमिक सूत्र के रूप में दर्शाया जा सकता है जो स्पष्टता, एकता और अनुक्रम प्रदान करता है। तर्कसंगत लोगो (Logos) के अनुसार सामंजस्यता एक गणितीय रूप है जो कोसमोस को अनुक्रम या व्यवस्था प्रदान करता है।

प्लेटो पाइथागोरस का बहुत बड़ा प्रशंसक था। प्लेटो ने दावा किया कि एक दार्शनिक की शिक्षा गणित, ज्यामिति और पाइथागोरस की सामंजस्यता संबंधी अध्ययन से शुरू होनी चाहिए ताकि वह समझदार दुनिया से दूर होकर विशुद्ध बुद्धिमता पर अपना ध्यान केंद्रित करे। सुकरात ने ग्लाउकोन से कहा, "यह संभव है कि जब आंखें खगोलीय गति पर केन्द्रित होती है तो कान संगीतमय ध्वनियों पर केन्द्रित होते हैं और इस प्रकार खगोल और संगीत के विज्ञान आपस में बारीकी से जुड़े हुए हैं। ग्लाउकोन, यही तो पाइथागोरस भी कहता है। हम सहमत हैं, क्या नहीं? (प्लेटो, रिपब्लिक) प्लेटो पाइथागोरस की सभी बातों से सहमत नहीं था। प्लेटो ने तार्किक अनुक्रम वाले और बुद्धिमत्तापूर्ण ब्रह्मांड के विचार को साझा किया। उनका सिद्धांत कई विशेष वस्तुओं के संदर्भ में शुद्ध संख्याओं पर निर्भर करता है।

उन्होंने सामंजस्यता या सद्भाव को संख्यात्मक मूल्यों के साथ जोड़ा। उनका मानना था कि हमें विपरीत चीजों के बीच जो संघर्ष है उसे खत्म करना चाहिए और उनके बीच सामंजस्यता बनाने के लिए एक निश्चित संख्या का उपयोग किया जाना चाहिए। (फिलेबस, 25 ई)"

ग्रॉटफ्रीड विल्हेम लिबनिज सद्भाव या सामंजस्यता के प्रारंभिक आधुनिक सिद्धांतकारों में से एक था। पूर्व-स्थापित सद्भाव तथा अन्य संदर्भों में सद्भाव का उपयोग के संबंध में उसके विचार प्रमुख हैं। पूर्व-स्थापित धारणा के अनुसार सभी एकल इकाइयां आंतरिक कारणों से संचालित होती है और बाहरी शक्तियों या वस्तुओं के साथ सम्बन्ध से अप्रभावित रहती हैं। इसके बावजूद वे उत्तमता के साथ आपस में जुड़ी होती हैं क्योंकि ईश्वर की दिव्य योजना के तहत उनका सद्भावपूर्ण सहयोग पूर्व-स्थापित होता है। एकल व्यक्ति या वस्तु की प्रकट अंतर-क्रिया एक सर्वोत्तम डिजाइन का हिस्सा है जिसके तहत सभी घटनाएं परिवेश की एकल व्यक्ति या वस्तु के साथ घटित होती हैं परन्तु वास्तव में एक दूसरे के साथ परिघटित नहीं होती हैं। पूर्व-स्थापित सद्भाव एक रणनीति है जिसके तहत शरीर- मस्तिष्क की समस्या पर काबू पाया जाता है। इसके अन्तर्गत दिमाग और शरीर में औपचारिक संबंध नहीं होता और दोनों अपनी क्रियाएं स्वतंत्र रूप से करती हैं लेकिन एक सटीक समय होता है जो अंतर-संबंध होने का आभास देता है। यह सटीक समय ईश्वर द्वारा स्थापित किया जाता है जिसे पूर्व-स्थापित सद्भाव कहा जा सकता है। ऐसा लगता है सभी एक दूसरे से संबंधित हैं परन्तु वास्तव में वे अस्थायी और स्थानिक निकटता के दर्शाने वाले होते हैं। यही वह स्थिति है जब प्रत्येक इकाई दूसरी इकाई का दर्पण होती है। इसे सभी अन्य वस्तुओं को साथ लेना चाहिए। यह अपनी कार्यप्रणाली के तहत कार्य करता है क्योंकि इसे प्रत्येक अन्य वस्तु के पूर्व-स्थापित कार्यों में अपने कार्य का सामंजस्य बिठाना है। पूर्व-स्थापित सद्भाव ईश्वर की तर्कसंगतता का एक कार्य है - एक सर्वोत्तम अनुक्रम की योजना जिसे केवल दिव्य बुद्धिमत्ता के द्वारा ही समझा जा सकता है।

डेवी व्यक्ति के सौंदर्य अनुभव के संदर्भ में सद्भाव की चर्चा करता है परन्तु उसका सामाजिक दर्शन आदर्श समुदायों का वर्णन करता है जो हमें सद्भाव की याद दिलाते हैं। वह लिखता है, "समाज व्यक्तियों का आपसी संबंध है। व्यक्ति समाज की एक सुदूर इकाई में विकास नहीं करता है बल्कि एक दूसरे के साथ संबंध से विकसित होता है। (डेवी, *द लेटर वर्क्स*, 1925-1953, 80) यहाँ हम व्यक्तियों को देखते हैं जो आपस में जुडे हुए हैं और समाज का निर्माण करते हैं - एक व्यापक संपूर्णता/डेवी जोर देकर कहते हैं कि समाज व्यक्तियों से पृथक होकर खड़ा नहीं हो सकता। समाज के निर्माण का आधार व्यक्तियों के परस्पर संबंध होते हैं। ये सम्बन्ध व्यक्तियों के साथ-साथ समाज के लिए लाभकारी होते हैं। समाज का अर्थ है - संघ, सम्मिलित प्रयास के लिए साथ आना और किसी अनुभव को महसूस करने के लिए कार्य करना जिसे साझीदार बनकर बेहतर बनाया जा सकता है। (डेवी, *द मिड़ल बर्म्स ऑफ जॉन डेवी*, 1899-1924, 197) एक साझे समाज में व्यक्ति एक दूसरे के साथ बेहतर अंतर-संबंध बनाते हैं। समुदाय के संबंध में डेंवी का विचार सद्भाव की परिभाषाओं के समान है। इसके तहत एक व्यापक संपूर्णता में विभिन्न हिस्से परस्पर जुड़े होते हैं और सभी हिस्सों को इसका लाभ प्राप्त होता है।

सद्भाव स्थिर नहीं रह सकता और यह समान तत्वों का एक साधारण संयोजन भी नहीं हो सकता है। डेवी के लिए, "सद्भाव या सामंजस्यता एकरूपता नहीं है या सार्वभौमिकों की तात्कालिकता नहीं है कृकृकृकृसद्भाव स्थिर नहीं बल्कि गतिशील है, यह एक व्यवस्थित परिवर्तन है .... अपनी लयबद्ध प्रकृति में, सद्भाव को न केवल विविधता और विपरीतता ही नहीं बल्कि तनाव और प्रतिरोध की भी आवश्यकता होती है।" (टैन, *कन्फ्यूशियन डेमोक्रेसी*, 75)

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) सद्भाव की अवधारणा पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

....

....

....

....

....

12.4 सद्भाव का वर्गीकरण

सद्भाव और संघर्ष की अनुपस्थिति को एशियाई परिवारों द्वारा खुशहाल परिवार के गुणों के रूप में माना जाता है। (शेक, 2001) अधिक पारंपरिक एशियाई लोगों में जीवन के प्रति एक सामूहिक नीति होती है, (त्रियांडिस, 1995) जहाँ परिवार केन्द्र में होता है। (ली तथा मेजेल्ड - मोसे, 2004) एशियाई माता-पिता और बच्चे उन गुणों का शायद ही वर्णन करते हैं जिन्हें यूरो-अमेरिकी संस्कृति में मूल्यवान समझा जाता है, जैसे भावनात्मक अभिव्यक्ति और संवाद। (शेक, 2001) संस्कृतियां उन गुणों को अधिक महत्व दे सकती है जिसमें जीवन के प्रति व्यक्ति की अपनी नीति हो और जहाँ स्वयं ही केन्द्र में हो। (त्रियांडिस, 1995)

कई संस्थान हो सकते हैं। मोटे तौर पर हम इनका निम्न वर्गीकरण कर सकते हैं :

1) **परिवार :** व्यक्ति परिवार में जन्म लेता है और परिवार में ही उसका पालन-पोषण होता है। उसके परिवार की स्थिति और उसके परिजनों विशेषकर अभिभावकों द्वारा ही उस व्यक्ति के व्यक्तिगत गुण विकसित और प्रभावित होते हैं।

2) राष्ट्र और सरकार : राष्ट्र ही वह स्थान है जहाँ व्यक्ति अपना जीवन बिताता है और विभिन्न प्रकार के कार्य करता है। अपने तथा अन्य देशों के संदर्भ में व्यक्ति की प्रतिबद्धता सामाजिक सद्भाव को प्रभावित करती है। सरकार की क्षमता शांति, समानता और स्वतंत्रता की गारंटी देने में शक्ति के उपयोग के रूप में परिलक्षित होती है। परिणामस्वरूप, एक सरकार को सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए स्पष्टवादी, ईमानदार, न्यायपूर्ण और उत्तरदायी होना चाहिए।

3) संगठन : एक व्यक्ति विशेषज्ञ या सेवा प्रदान करने वाला या किसी गैर-उत्पादन संबंधी कार्य से जुड़ा हो सकता है। किसी भी स्थिति में व्यक्ति का अन्य व्यक्तियों से सम्बन्ध उसकी कार्य संस्कृति और उसके सहयोगियों से प्रभावित होता है।

4) समुदाय और आस-पड़ोस : एक पुरानी कहावत है : एक व्यक्ति अपने दोस्तों के जरिए जाना जाता है। व्यक्ति की मानसिक स्थिति और पड़ोस में रहने वाले व्यक्तियों की प्रकृति तथा नेटवर्क व्यक्ति के सामाजिक सद्भावके प्रति कटिबद्धता को काफी हद तक प्रभावित करते हैं।

12.5 सामाजिक सद्भाव की अवधारणा

सामाजिक सद्भाव एक पारंपरिक विचार है जो एक आदर्श समाज का सुझाव देता है, ऐसा समाज जहाँ संघर्ष नहीं है और व्यक्ति एक-दूसरे के साथ सहयोग करता है। सामाजिक

सौहार्द का एक प्रमुख तत्व है - लोकतंत्र और कानून का संचालन तथा निष्पक्षता व न्याय। यह लोगों की चिंताओं का दर्पण होता है।

सामाजिक सद्भाव स्वभाविक तौर पर एक सामाजिक विचार है जो सामाजिक संगठनों में समाहित है। सक्षम नागरिकता के संदर्भ में यह समायोजित परिकल्पना और दिनचर्या को मजबूती प्रदान कर सकता है जहाँ राज्य लोगों के कल्याण के लिए प्रयासरत है।

सामाजिक सद्भाव की परिकल्पना का प्राकृतिक पैमाना भी है। यह व्यक्ति और प्रकृति के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की महत्वपूर्ण जांच के लिए उल्लेखनीय क्षमता प्रदान करता है।

सामाजिक सद्भाव की अवधारणा का प्रारंभ कन्फ्यूशियस काल के दौरान चीन को माना जा सकता है। इसलिए इस अवधारणा को नव-कन्फ्यूशियसवाद के रूप में व्यक्त किया जाता है। (गुओ और गुओ, 15 अगस्त, 2008) वर्तमान समय में मध्य 2000 के दौरान महासचिव हू-जिंताओ की वैज्ञानिक विकास सिद्धांत में इस अवधारणा को एक प्रमुख तत्व के रूप प्रस्तुत किया गया। 2005 के नेशनल पीपुल्स कांग्रेस में हू-वेन प्रशासन ने इसे प्रस्तुत किया (रूईपिंग फेन, 11 मार्च, 2010)

चीनी समाज में बढ़ती सामाजिक बुराई और असंतुलित विकास की प्रतिक्रिया में इस दर्शन को आगे बढ़ाया गया। सामाजिक असंतुलन का कारण था - अबाधित मौद्रिक विकास। इस वजह से सामाजिक संघर्ष हुए। सामाजिक संतुलन और सद्भाव के लिए वित्तीय विकास के ईद-गिर्द इस सिद्धांत का विकास हुआ। (वाशिंगटन पोस्ट, 12 अक्तूबर, 2006) एक मामूली समृद्ध समाज में यह सिद्धांत कम्युनिस्ट पार्टी के सर्वाधिक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय लक्ष्यों में एक था।

सद्भावपूर्ण समाज को बढ़ावा देना हू-जिंताओ का प्रशासनिक दर्शन था जो पूर्व शासकों के दर्शन से अलग था (जोंग वू, 11 अक्टूबर, 2006) अपने शासनकाल के अंतिम समय में हू इस दर्शन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार देना चाहते थे। इसमें संपूर्ण विश्व में शांति और सहयोग पर विशेष बल दिया गया। इससे सद्भावपूर्ण विश्व का निर्माण होगा। हू के उत्तराधिकारी शी जिनपिंग ने इस सिद्धांत के संयमित उपयोग से "चीनी स्वप्न" के अपने दृष्टिकोण को अधिक स्पष्ट किया है।

एक संघीय या कम्युनिस्ट गणराज्य में सामाजिक सद्भाव सद्भावपूर्ण समाज के विकास से संबंधित है। सामाजिक सद्भाव एक प्रक्रिया है जिसके तहत एक विशिष्ट संस्कृति में लोगों के बीच सम्मान, संवाद, स्नेह, विश्वास, शांति, उदारता, तालमेल और मूल्य बढ़ाने का प्रयास किया जाता है और इसके लिए राष्ट्रीय मूल, वजन, वैवाहिक स्थिति, जातीयता, रंग, लिंग, नस्ल, उम्र और व्यवसाय पर ध्यान नहीं दिया जाता है। इस प्रकार सामाजिक सद्भाव मौलिक रूप से सामाजिक अवधारणा है। इसका अर्थ है - एक-दूसरे के साथ सद्भावपूर्ण माहौल में जीवन व्यतीत करना। इस अर्थ में हम लोगों के लिए कार्य कर रहे विशिष्ट प्रतिष्ठानों और लोगों के साथ उनके संबंध पर भी ध्यान देना चाहिए। सामाजिक सद्भाव किसी संस्कृति के आकलन के लिए सबसे महत्वपूर्ण विचार है। एक वैश्विक और सूचना केन्द्रित समाज में सामाजिक सामंजस्य एक प्रोत्साहन है जो प्रेम, शांति, न्याय, स्वतंत्रतता, समानता, भाईचारा, सहयोग, अहिंसा, सहिष्णुता, मानवतावाद और अन्य सार्वभौमिक गुणों को एकजुट करता है और बच्चों को प्राथमिकता प्रदान करता है। इस प्रकार पूर्व और पश्चिम की संस्कृतियों के लिए सद्भाव एक उभयनिष्ठ मूल्य है जो संस्कृतियों के संघर्ष को खत्म कर सकता है। सामाजिक सद्भाव युद्ध, आतंक और गरीबी से परे एक सद्भावपूर्ण और सतत शांति की स्थापना करता है।

इस प्रकार सद्भाव आम लोगों को अपने परिवेश के व्यक्तियों के साथ समन्वय स्थापित कर "प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रत्येक वस्तु" को विकसित करने के लिए प्रेरित करता है। दुःखद स्थिति है कि यह विचार अभी भी केवल एक विचार ही है क्योंकि मनुष्य मैत्री के साथ रहने में नहीं बल्कि असद्भावपूर्ण माहौल बनाने में दक्ष है। इसके लिए छोटी-छोटी बातों के लिए होने वाले झगड़ों को समाप्त करना होगा। सभी व्यक्तियों को प्रत्येक व्यक्ति की खुशी और शांति के लिए विचार करना होगा। इसे अपना व्यक्तिगत कर्तव्य समझना होगा। निकट भविष्य में ऐसा संभव होना मुश्किल लगता है।

12.6 सामाजिक सद्भाव को कैसे समझा जाए?

सामान्य अर्थ में सामाजिक सद्भाव का अर्थ है एक ऐसी सामाजिक स्थिति जो संतुलन, तालमेल और परस्पर सहयोग प्रदर्शित करता है और समाज विकास की दिशा में आगे बढ़ता है। यह स्थिति संघर्ष, तनाव और कलह से रहित होती है। सामाजिक सद्भाव सभी कुछ या कुछ भी नहीं की स्थिति नहीं होती है बल्कि यह विभिन्न स्तरों पर मतभेद की अनुमति देता है। किसी समाज के सद्भाव का स्तर समाज के विभिन्न आयामों के सद्भाव की मात्रा/स्तर पर निर्भर करता है। एक समाज विभिन्न कालखंडों में विभिन्न स्तर के सद्भाव को प्रदर्शित करता है। यह विभिन्न कालखंडों में सद्भाव के तत्वों की उपस्थिति पर निर्भर करता है। इसलिए एक समाज कालखंड "ए" में अत्यधिक सद्भावपूर्ण हो सकता है और कालखंड "बी" के दौरान कम सद्भावपूर्ण हो सकता है। इसके अलावा समाज में सद्भाव का एक महत्वपूर्ण घटक उपस्थित रह सकता है और साथ ही ऐसे घटक भी मौजूद हो सकते हैं जो समाज को सद्भाव रहित बनाते हैं, जब समाज के महत्वपूर्ण आयामों में सद्भावना/सामंजस्यता रहती है तो समाज अधिकतम सद्भाव का अनुभव करता है। इसके विपरीत जब समाज के महत्वपूर्ण आयामों में सामंजस्यता/सद्भावना का अभाव होता है तो समाज सद्भावरहित हो जाता है। तुलनात्मक स्थिति में, समाज की सद्भावपूर्ण स्थितियों में अंतर होता है। कुछ समाज अन्य समाजों की तुलना में अधिक सद्भावपूर्ण होते हैं क्योंकि उनमें सद्भावपूर्ण तत्वों की मात्रा अधिक होती है।

एक समाज संतुलित होता है जब एक प्रकार की शक्तियों या हितों को विपरीत प्रकार की शक्तियाँ या हित चुनौती देते हैं। एक संतुलित समाज में कोई एक शक्ति या हित इस हद तक हावी नहीं हो सकता कि अन्य शक्तियों या हितों का दमन किया जा सके। संरेखण या तालमेल ऐसी स्थिति को कहा जा सकता है जब समाज के तत्व उचित तथा क्रम के अनुसार परस्पर जुड़े हों तथा किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इन तत्वों में समन्वय हो। एक आदर्श संरेखीय समाज में हितों, जरूरतों, सम्बन्धों, गतिविधियों, प्रक्रियाओं, नियमों, मूल्यों और लक्ष्यों में बेहतर समन्वय हो तथा एक साझे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एकीकृत हों। परस्पर सहयोगी और समृद्ध समाज का अर्थ है कि समाज के निवासी परस्पर सहयोग प्रदान करते हैं और विकास व समृद्धि के लिए एक दूसरे को मदद, इच्छाशक्ति व विश्वास के साथ सहयोग करते हैं। अंत में, यह कहा जा सकता है कि एक समाज को सही अर्थ में सद्भावपूर्ण नहीं कहा जा सकता यदि समाज ने प्रकृति के साथ सामंजस्य नहीं बिठाया है। प्रकृति जो समाज को समर्थन देती है और दीर्घावधि सहायता प्रदान करती है। इस प्रकार मनुष्य - प्रकृति का सामंजस्य भी एक सद्भावपूर्ण समाज का महत्वपूर्ण तत्व है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) सामाजिक सद्‌भाव से आप क्या समझते हैं? विवेचना करें।

....

....

....

....

....

12.7 सामाजिक सद्‌भाव को कैसे कायम किया जाए?

यह असंभव प्रतीत होता है। राष्ट्रों और पड़ोसियों के बीच बहुत अधिक नकारात्मकता है। मुख्य कारण लालच, ईर्ष्या, अक्षमता, शक्ति की लालसा और मूर्ख राजनेताओं का संयोजन है। इसका कोई इलाज नहीं है। एक व्यक्ति अधिक से अधिक इन नकारात्मकताओं से अपने को बचा सकता है। यदि व्यक्ति यह कहता है कि, "जो भी मेरे वश में है, मैं उसे हड़पनेवाला हूँ" तो समाज के विलुप्त होने की प्रक्रिया में तेजी आएगी। यह अच्छा है या बुरा - यदि इस बहस को छोड़ दें तो यह अवश्य ही दूसरे प्राणियों के तो संदर्भ में अन्यायपूर्ण लगता है कि हम पूरी पृथ्वी अपने लिए मान लें। सभी चीजों को आगे बढ़ना चाहिए। सामाजिक सद्‌भाव तक पहुँचने के रास्ते हैंः परस्पर सम्मान और समझ; संवाद, शांति, स्वतंत्रता, निष्पक्षता, न्याय, समानता, कोई भेदभाव नहीं आदि।

लोगों की निष्पक्षता और न्याय का पैमाना है - धन और आय वितरण के मामले में लोगों की निष्पक्षता, वित्तीय और टैक्स नीति, रोजगार के अवसर, व्यक्तिगत विकास, उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए परीक्षा प्रणाली, सरकारी कर्मचारियों की पदोन्नति, सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल सुविधा, निःशुल्क शिक्षा आदि।

12.8 सामाजिक सद्‌भाव को बिगाड़ने वाले कारक

स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है कि सामाजिक सद्‌भाव के विघटन के लिए कौन से कारक जिम्मेदार होते हैं? इस प्रश्न का उत्तर आज की सामाजिक व्यवस्थाओं के गहन विश्लेषण में निहित है। अपने पूर्ववर्ती समाजों के विपरीत आज का समाज एक बहुआयामी, बहु-सांस्कृतिक, बहु-जातीय और एक जटिल विविधता वाला समाज है।

सामाजिक विषमता धर्म, जाति, नस्ल, भाषा आदि पर आधारित असमानता से जन्म लेती है। हालांकि यह पूरी दुनिया में मौजूद है लेकिन विकासशील देशों में एक सामान्य घटना है। इन संघर्षो के कारण विकासशील देशों की विकास प्रक्रिया बाधित हुई है। ऐसे समाजों का इतिहास और सांस्कृतिक अतीत अक्सर असमानता को बढ़ावा देते हैं। वे मनुष्य की मूलभूत गरिमा और आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाते हैं। वास्तव में, सामाजिक सद्‌भाव के विनाश के ये मूल कारण हैं। अवसरों तक पहुँच में असमानता के कारण भी आर्थिक विषमताएं हैं। समाज में लोगों की आर्थिक स्थिति में अंतर ने दो भिन्न वर्गों का निर्माण किया है - एक जो सम्पन्न हैं और दूसरे वे जो विपन्न हैं। इतिहास बताता है कि वर्गों के सीमांकन से अमीर वर्ग द्वारा गरीबों का शोषण किया जाता है। इससे सामाजिक ताने-बाने पर विपरीत असर पड़ता है, संघर्ष जन्म लेता है और परिणामस्वरूप आपसी सम्बन्ध छिन्न-भिन्न होते है और समाज में विषमता बढ़ती है।

12.9 सद्भावपूर्ण समाज की विशेषताएं

एक सद्भावपूर्ण समाज अपनी विशेषताओं के आधार पर अपने निवासियों को सुरक्षा, संरक्षा और आजादी प्रदान करता है तथा उनमें भावनाओं व अन्य सकारात्मक प्रभावों की संतुष्टि की सुविधा प्रदान करता है। निवासियों के बीच संवाद और आपसी संबंधों की परस्पर सम्मान, विश्वास और साझेदारी से मजबूती मिलती है तथा पारस्परिक सहायता और लाभकारी सहयोग से इसे बढ़ावा मिलता है। समाज के निवासियों की ऐसी भावनाएं होती हैं जिसके आधार पर वे परस्पर लाभकारी सहयोग व संवाद की शुरूआत करते हैं। इन भावनाओं और गुणों में शामिल हैं - सहानुभूति, सहिष्णुता, उत्साह, पारस्परिकता, निष्पक्षता, नैतिक जागरूकता, तर्कशीलता, विचारशीलता, साझेदारी, देखभाल आदि। सद्भावपूर्ण समाज की प्रणालियां और संस्थाएं निवासियों के अधिकारों व आजादी की रक्षा तथा विकास ही नहीं करतीं बल्कि इन भावनाओं और गुणों का पोषण भी करती हैं। अन्य तर्कसंगत मूल्यों को प्रोत्साहन देने के अलावा निवासियों को सामाजिक सद्भाव को व्यवहार में बनाए रखने और इसे संरक्षित रखने के प्रयास करने चाहिए। चूँकि यह एक आदर्श स्थिति है इसलिए संभव है कि वास्तविक दुनिया में इसे पूरी तरह से अनुभव करना संभव न हो। परन्तु इसके प्रमुख गुणों को सिद्धांत रूप में महसूस किया जा सकता है। इसे अकल्पनीय या असंभव या इच्छा आधारित विचार मानना जल्दबाजी होगी। किस हद तक इस अवधारणा को लागू किया जा सकता है, इसका आकलन व परीक्षण अनुभव आधारित साधनों के द्वारा अर्थात् अप्रत्यक्ष रूप से किया जा सकता है।

इसलिए सामाजिक सद्भाव में सकारात्मक और नकारात्मक - दोनों ही प्रकार के विचार हैं। यह, अवधारणा के वर्तमान प्रयोग और सर्वेक्षणों में उपयोग किये जाने वाले अर्थ के अनुरूप ही है। जब नकारात्मक आधार पर कल्पना की जाती है तो यह ऐसी स्थिति की ओर इंगित करता है जहाँ सघर्ष, टकराव, तनाव और विरोधाभास की मौजूदगी नहीं होती है। सकारात्मक अर्थ में सामाजिक सद्भाव परस्पर समर्थन, सुविधा और समृद्धि की स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है जो आपसी विश्वास, सम्मान और साझेदारी से बंधा होता है। जब किसी समाज में केवल नकारात्मक रूप से कल्पना की गई विशेषताएं विद्यमान रहती है तो कहा जाता है कि इस समाज में बुनियादी सद्भाव मौजूद है। जब किसी समाज में सकारात्मक रूप से कल्पना की गई विशेषताएं होती है इसे अधिकतम सद्भाव की संज्ञा दी जाती है। बुनियादी या अधिकतम सद्भाव की उपस्थिति वांछनीय है। सामाजिक सद्भाव की अवधारणा के अंतर्गत सद्भाव के मूलभूत विचारों को शामिल किया गया है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) सद्भावपूर्ण समाज की विशेषताओं पर चर्चा करें।

....

....

....

....

....

....

12.10 सामाजिक सद्‌भाव को प्रोत्साहन

व्यक्तियों को एक-दूसरे के लिए अधिक सामाजिक बनाकर सामाजिक सद्‌भाव को बढ़ावा दिया जा सकता है। इसे दो स्तरों पर किया जा सकता है :

क) संस्थागत स्तर : संस्थागत स्तर पर सामाजिक सद्‌भाव के अंतिम लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निम्न मध्यवर्ती लक्ष्यों का अनुपालन किया जा सकता है, जैसा कि नीचे दी गई तालिका 12.1 में दिखाया गया है :

तालिका 12.1: सामाजिक सद्‌भाव के लक्ष्य

संस्थाएं	मध्यवर्ती लक्ष्य	अंतिम लक्ष्य
परिवार	• पारिवारिक सहयोग और कल्याणकारी प्रावधान • तलाक की दर कम, सामाजिक रूप से स्थायी जन्म दर • वरिष्ठ सदस्यों की प्रभावी पारिवारिक देखभाल • परिवार के अंदर और बाहर लैंगिक समानता	
राष्ट्र और सरकार	• समाज में शांति • आर्थिक और राजनीतिक आजादी • आपराधिक न्याय • समानता • मानवाधिकारों की सुरक्षा	• सभी संबंधों में नीति परायणता • ईश्वर के प्रति सम्मान • प्रेम/सहानुभूति • न्याय, निष्पक्षता बराबरी
संगठन	• प्रशासन और निष्पादन आदि में पारदर्शिता • धन का मोटे तौर पर वितरण • व्यापार और सामुदायिक जीवन का एकीकरण • निरंतर ऋणग्रस्तता की अनुपस्थिति • पारिवारिक व्यवसाय/स्वरोजगार का उच्च स्तर	• विश्वास • सत्य • क्षमा • आशा • उदारता • दया
समुदाय और आस-पड़ोस	• जोखिम साझा करने और प्रत्यक्ष वित्तीय संबंधों के लिए प्रोत्साहन • एक साप्ताहिक साझा अवकाश दिवस आदि • सामुदायिक न्यायालय और स्थानीय न्याय के अन्य रूप • कानून संबंधी व्यापक ज्ञान • सजा के बाद अपराधी का समाज में एकीकरण • अन्य समस्याओं को समझना तथा उनके समाधान के लिए प्रयास करना आदि	

ख) व्यक्तिगत स्तर : निम्न सुझावों का पालन करके व्यक्तिगत स्तर पर यह किया जा सकता है।

- *सहानुभूति को विकसित करना :* सहानुभूति, दूसरे की भावनाओं व समस्याओं की गहरी समझ को दर्शाती है। भावनाएं व्यक्ति को सही या गलत की ओर ले जाती हैं। दूसरे के सही अथवा गलत कार्यों से संबंधित निर्णय लेने के दौरान व्यक्ति को दूसरे की भावनाओं को समझने की भी जरूरत है। यदि ऐसा होता है तो दुष्कर्म और दुष्कर्मीय गरीब और झपटमार भ्रष्टाचार और लंबित मामले नहीं रहेंगे। ऐसे समाज में सामाजिक सद्भाव समृद्ध होगा।

- *मित्रता के लिए सामाजिक समूह :* एक समूह में दो या दो से अधिक सदस्य होते हैं और इनका कमोबेश समान लक्ष्य होता है। कोई व्यक्ति अपनी रूचि के अनुसार समूह का चुनाव कर सकता है जैसे पुरुष या महिला क्लब, बच्चों के लिए मनोरंजन केन्द्र, सामाजिक कार्यकर्ता क्लब, पड़ोस का स्वच्छता केन्द्र या स्थानीय व्यवसाय संघ आदि। समूह में शामिल होने का लक्ष्य दूसरों से संवाद स्थापित करना होना चाहिए ताकि दूसरों को भली-भांति समझा जा सके। इसके अलावा एक-दूसरे के लिए कार्य करना चाहिए, लक्ष्यों को साझा करना चाहिए, एक-दूसरे को समझना चाहिए, सम्पर्क बनाने चाहिए आदि। संकट के दौरान उनका महत्व बढ़ जाता है।

- *पारस्परिक रूप से सक्षम बनाना :* हम सभी के पास विशिष्ट प्रतिभा, कौशल व क्षमता है। यही हमारी ताकत है और यही हमारी कमजोरी भी है क्योंकि हमें कुछ निश्चित चीजों के लिए ही कौशल प्राप्त होता है। समूह में साथ काम करने वाले व्यक्ति अपना ज्ञान और कौशल एक-दूसरे के साथ साझा करते हैं। ऐसा समूह अधिक दक्ष होता है क्योंकि एक सदस्य का कमजोर पक्ष दूसरे का मजबूत पक्ष हो सकता है। एक साथ होने में ही शक्ति निहित है। यह आपसी विश्वास लम्बे समय के लिए सद्भावपूर्ण संबंधों को जन्म दे सकता है।

- *सहयोगियों को हासिल करना :* लोग जो एक-दूसरे के प्रति विश्वास रखते हैं और देखभाल करते हैं और प्रगति के लिए ज्ञान आधारित जागरूकता का उपयोग करते हैं, उन्हें डरने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब वे समूह को समर्थन देने के लिए प्रयास करते है तो उनकी अपनी आवश्यकताएं भी पूरी हो जाती हैं। छोटे समूह साथ मिलकर बड़े समूह बन सकते हैं और इस प्रकार साथ आगे बढ़ सकते हैं। यदि हम ऐसा नहीं करते है तो हमें निकट भविष्य में हताश लोगों से खतरों का सामना करना पड़ेगा। जिन लोगों के पास जीवन यापन के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं हैं वे उन लोगों के सहयोगी बन जाएंगे जिनके पास बर्बाद करने के लिए भी पर्याप्त से अधिक संसाधन है। सद्भावपूर्ण और नेक सम्बन्धों के माध्यम से इन सहयोगियों की पहचान करनी होगी।

- *अंतर समाप्त करना :* पूरा ब्रह्मांड द्वंद में विभाजित है। यह दो विपरीत शक्तियों के बीच के विकल्प के समान है। एक निर्माण की ओर अग्रसर है तो दूसरा विनाश की ओर। परन्तु इस अंतर को पाटने की जरूरत है और लोगों को निर्माण की ओर ले जाने की आवश्यकता है। आम तौर पर जब हम दूसरों की सेवा करने का विकल्प चुनते हैं और उनकी स्वतंत्र इच्छाओं का सम्मान भी करते हैं तो हम सृजन की भावना का पक्ष लेते हैं। ब्रह्मांड भी इसका प्रत्युत्तर सद्भाव में देता है।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने के विभिन्न तरीकों पर चर्चा करें।

....

....

....

....

....

....

....

12.11 सामाजिक सद्भाव पर गाँधी

महात्मा गाँधी के जीवन और कार्यों में सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देना स्वराज-प्राप्ति के समान था। अपने पूरे जीवन में गाँधी ने सांप्रदायिक हिंसा और युद्ध के खिलाफ लड़ाई लड़ी। गाँधी ने सांप्रदायिकता के सभी रूपों - हिन्दू, मुस्लिम और सिख का विरोध किया। उन्होंने जनवरी, 1942 में लिखा, "मैं इसे सर्वथा गलत मानता हूँ कि व्यक्ति को धर्म के आधार पर पृथक किया जाए।" गाँधी ने मूलभूत सांप्रदायिक अवधारणा का भी खंडन किया कि अपने अलग-अलग धर्मों के कारण हिन्दुओं और मुस्लिमों के राजनीतिक-आर्थिक हित अलग-अलग हैं।

गाँधी की धार्मिक दृष्टि में धर्मों की समानता पर जोर दिया गया। गाँधी ने कहा कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए सभी धर्मों को समान-सम्मान देना पहला कदम है। वे दृढ़ता से मानते थे कि कोई धर्म, अन्य धर्म की तुलना में श्रेष्ठ या नीच नहीं है। अपने आध्यात्मिक ज्ञान के लिए गाँधी ने सभी धर्मों के ग्रंथों का अध्ययन किया। वे भगवद् गीता तथा कुरान की शिक्षाओं तथा न्यू टेस्टामेंट (बाईबिल) में माउंट पर दिये गए उपदेशों से सर्वाधिक प्रभावित थे। उनकी धार्मिक व नैतिक दृष्टि बौद्ध तथा जैन धर्मों से भी बहुत प्रभावित थीं।

गाँधी के अनुसार दुनिया के सभी महान धर्मों को अपने अनुयायिओं के बीच आत्म नियंत्रण, बलिदान, सद्भाव, शांति और समझ पर आधारित जीवन का उपदेश देना चाहिए ताकि पृथ्वी पर स्वर्ग का निर्माण हो सके। गाँधी ने सभी धर्मों की अच्छी बातों तथा अनुयायियों की क्षमता पर विशेष जोर दिया जिससे विभिन्न धार्मिक मामलों का समाधान ढूंढा जा सके। ये धार्मिक मामले संघर्ष पैदा करते हैं। इसके लिए सभी धर्मों की सच्ची भावना और एकजुट शक्ति को जगाना होगा तथा आपसी सहिष्णुता, विश्वास, सम्मान और दिलों का मेल जैसी भावनाओं को विकसित करना होगा।

गाँधी का दृढ़ विश्वास था कि भारत की स्वतंत्रता और विकास के लिए सांप्रदायिक सद्भाव और अंतर-धर्म संवाद जरूरी हैं। सांप्रदायिक समस्या को हल करने तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करने के लिए गाँधी ने 1920 के दशक के खिलाफत आंदोलन को समर्थन देकर एक गंभीर प्रयास किया। 1946 से 1947 के दौरान गाँधी ने सांप्रदायिकता के खिलाफ तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए निरंतर अभियान चलाया। नोआखली, बिहार, कोलकाता

और दिल्ली के भीषण दंगों के दौरान सांप्रदायिक शांति कायम करने के लिए उनके किये गए कार्य अब किंवदंती बन गए हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 6

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ii) सुझाए गए उत्तर के लिए इकाई के अंत में देखें।

1) सामाजिक सद्भाव पर गाँधी के विचारं पर प्रकाश डालें।

....

....

....

....

....

....

....

....

12.12 सारांश

जब लोग सामाजिक समस्याओं का हल ढूंढने एक साथ आते हैं तो विविधिता के तनाव में सामाजिक सद्भाव की आवश्यकता पड़ती है। इन समस्याओँ के रहते हुए काम करना सद्भावपूर्ण समाज का प्रारंभिक चरण है जबकि सफल कार्यान्वयन इसका अंतिम चरण है। इसका अर्थ यह है कि सद्भावपूर्ण समुदाय निरंतर सद्भावपूर्ण नहीं रहते हैं परन्तु इन समुदायों के पास ऐसी संस्थाएं और प्रक्रियाएं होती हैं जो लगातार सद्भाव को प्रोत्साहन प्रदान करती हैं। टैन उनमें से कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं की पहचान करता है जिनमें संवाद, समावेश, विकास शामिल हैं। सद्भाव में विभिन्न तत्व क्रमबद्ध तरीके से उपस्थित रहते हैं। सामाजिक सद्भाव एक गुण है जो सामाजिक स्थिति पर व्याप्त रहता है जब साझे मूल्यों को प्राप्त किया जाता है। इसके लिए संवाद और भागीदारी की आवश्यकता होती है। सामाजिक सद्भाव में प्रत्येक प्रतिभागी प्रारंभिक चरण में योगदान देता है और अपनी योग्यता के अनुसार अंतिम चरण का आनंद प्राप्त करता है। डेवी के दर्शन के अनुसार सामाजिक सद्भाव को व्यक्तिगत-सामुदायिक विकास में अवश्य योगदान देना चाहिए यदि समुदाय एक नियामक आदर्श बनना चाहता है। (पूर्वोक्त)

सद्भाव केवल ब्रह्मांड तथा व्यक्तिगत स्तर पर ही प्राप्त नहीं किया जा सकता बल्कि इसे मानवीय संबंधों में भी अनुभव किया जा सकता है। एक परिवार के सदस्यों, एक परियोजना के भागीदारों, एक कार्यालय के कर्मचारियों तथा एक देश के नागरिकों को सामंजस्य या सद्भावपूर्ण माहौल के अन्तर्गत माना जाएगा जब उनके व्यक्तिगत योगदान सभी अन्य सदस्यों तथा एक बड़े लक्ष्य को समर्थन प्रदान करते हैं। लोगों में सद्भाव एक वंशावली गुण है जो सामाजिक परिस्थितियों की अवधारणा बनाने का एक तरीका भी है। एक समावेशी समाज के निर्माण के लिए धार्मिक सहिष्णुता, सम्मान और सभी मनुष्यों से प्रेम से संबंधित गाँधी का आह्वान अपरिहार्य है और वर्तमान परिदृश्य में कुछ अतिरिक्त किये जाने की आवश्यकता है।

12.13 संदर्भ ग्रंथ

डेवी, जे. (2008), *द मिडिल वर्क्स ऑफ जॉन डेवी, 1899-1924*, न्यू यॉर्क : साउथर्न इलिनॉयस यूनिवर्सिटी प्रेस, 197

कुमार हजिरा (1995), थियरीज इन सोशल वर्क प्रैक्टिस, देहली : फ्रेंड्स पब्लिशर्स।

डेवी, जे. (1988), *जॉन डेवी : द लेटर वर्क्स, 125-1953, 1938-1939*, वॉल्यूम-13, न्यू यॉर्क : साउथर्न इलिनॉयस यूनिवर्सिटी प्रेस, 80

जॉनसन एल.सी. (1992), *सोशल वर्क प्रैक्टिस : ए जर्नलिस्ट ऐप्रोच*, यू.एस.ए. : ऐलीन एण्ड बेकन.

अरिस्टूट्ल (1989), *अरिस्टूट्ल इन 23 वॉल्यूम्स*, वॉल्यूम 17, 18, ट्रांसलेटेड बाय हग ट्रेडेन्निक, कैम्ब्रिज, एम.ए., हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस : लंदन, विलियम हीनमैन लिमिटेड

प्लेटो (1925), *प्लेटो इन ट्वेल्व वॉल्यूम*, वॉल्यूम 19 (*फिलेबस 25 ई.)*, ट्रांस्लेटेड बाय हैरल्ड एन. हारोल्ड एन फॉलर, कैम्ब्रिज, एम.ए., हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

गॉटफ्रीड विलहेम लीबनिज़ (1989, फर्स्ट पब्लिश्ड 1716), *फिलोसफिकल ऐस्से*, लंदन, हैकेट्ट पब्लिशिंग कम्पनी, आईएनसी.

गुओ एण्ड गुओ (2008, 15थ अगस्त), *चाइना इन सर्च ऑफ ए हार्मोनियस सोसाइटी*, न्यू यॉर्क : लेक्सिंग्टन बुक्स

रूइपिंग फैन (2010, 11 मार्च), रिकंस्ट्रस्टक्शन कंफ्यूशियनिज़्म : रिथिंकिंग मोरलिटी आफ्टर द वेस्ट, *स्प्रिंगर साइंस एण्ड बिजनेस मीडिया* https://www.academia.edu/5282393/Modern_Confucianism_and_the_Concept_of_Harmony

चाइनाज पार्ट लीडरशिप डिक्लेयर्स न्यू प्रायोरिटी : 'हार्मोनियस सोसाइटी', *द वॉशिंगटन पोस्ट*, अक्टूबर 12, 2016, *रिट्राइव्ड 2011-01-20*

शेक, डी.टी.एल., (2001), पर्सेप्शन्स ऑफ हैप्पी फैमिलीज अमंग्स्ट चाइनीज ऐडोल्सेंट्स एण्ड दीयर पैरेंट्स : इम्प्लिकेशंस फॉर फैमिली थिरेपी, *फैमिली थिरैपी*, 28, 73-103

टैन, सोर-हून (2003), कंफ्यूशियन डिमोक्रेसी : ए डीवियन रिकंस्ट्रक्शन, न्यू यॉर्क : स्टेट यूनिवर्सिटी न्यू यॉर्क प्रेस

ट्रीअन्डीज, एच.सी. (1995), *इंडिविजुअलिज्म एण्ड कलेक्टिव*, बोल्डर, सीओ : वेस्टव्यू प्रेस

ली, एम. वाय. एण्ड एमजेल्डे-मोस्से, एल. (2004), कल्चरल डिस्सोनेंस अमंग जनरेशंस : ए सोल्यूशन फोकस्ड एप्रोच विद ईस्ट एशियन इल्डर्स एण्ड दीयर फैमिलीज, *जर्नल ऑफ मैरिटल एण्ड फैमिली थिरैपी*

ऐलेन, आर.ई., (2006), *प्लेटो : द रिपब्लिक* न्यू हैवेन : येल यूनिवर्सिटी प्रेस

ज़ॉन्ग, वू (2006), अक्टूबर 110, चाइनाज येर्न्स फॉर एचयूज 'हार्मोनियस सोसाइटी', *एशिया टाइम्स*.

वेब लिंक्स

www.gse.harvard.edu/news-impact/2013/09/educat ions-impact-on-social-harmony

www.goffs.herts.sch.uk

www.jubilee-centre.org/document.php
www.un-documents.net/a60r11.htm

12.14 अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यासों के उत्तर

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 1

1) आपके उत्तर में सद्भाव के पश्चिमी और भारतीय विचार की व्याख्या की जानी चाहिए।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 2

1) अपने उत्तर में सामाजिक सहयोग और आपसी साझेदारी के महत्व पर प्रकाश डालें।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 3

1) अपने उत्तर में व्यक्तिगत और संस्थागत दोनों स्तर पर सहायता को शामिल करें।

अपनी प्रगति की जांच करें अभ्यास 4

1) आपके उत्तर में धार्मिक सद्भाव के विचार, विविधता के लिए सम्मान शामिल होना चाहिए।